Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका



दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 10 30 अक्तूबर, 2026 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

महिला सुरक्षा एक चुनौती



डा. महेन्द्र सिंह मलिक

राष्ट्र में महिलाओं के विरुद्ध अपराध कोई नई समस्या नहीं है। यह एक गंभीर त्रासदी है जो कि किसी भी राज्य में किसी न किसी जघन्य घटना से साधारण जनमानस की अंतरात्मा को झकझोर देती है जिस पर कुछ समय खूब हौवा होता है और तत्पश्चात वही घटनाक्रम लौट आता है। राष्ट्रीय क्राईम रिपोर्ट ब्यूरो 2025 के आंकड़ों के अनुसार राष्ट्र में 445256 महिलाओं के विरुद्ध अपराध दर्ज हुए। इनमें उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा 66,381 मामले दर्ज हुए। इसी प्रकार दिल्ली में 133.6 प्रति लाख महिला अपराध दर्ज हुए। इसके बाद तेलंगाना में 124.9, राजस्थान में 114.8, ओडिशा में 112.4 व हरियाणा में 110.3 मामले प्रति लाख राष्ट्र की औसतन संख्या 66.2 के मुकाबले घटित हुए।

इन अपराधों में 30–31 प्रतिशत पति या रिश्तेदारों द्वारा प्रताड़ना, 19 प्रतिशत किडनैपिंग व फिरौती, 18 से 19 प्रतिशत महिलाओं की अस्मिता से संबंधित व 7 प्रतिशत बलातकार व जोर–जबरदस्ती के अपराध दर्ज किये गये। वर्ष 2024 के एन.सी.आर.बी के आंकडों के अनुसार महिला विरुद्ध अपराधों में मामूली 1.5 प्रतिशत की गिरावट दर्शाई गई जो कि यानि 4.41 लाख मामले घटित हुए। यह अंतर संतोषजनक नहीं है जिसका अर्थ है कि अभी भी हर 71 सैकेंड में एक मामला सामने आता है जो कि महिला सुरक्षा के नाम पर प्रश्नचिन्ह् है।

राष्ट्र में प्रतिदिन 80 से अधिक बलात्कार के मामले दर्ज होते हैं। हर घंटे लगभग 51 एफ.आई.आर. दर्ज होती हैं और हर महीने औसतन 2400 से 2700 मामले सामने आते हैं, जो कि इनमें घरेलू हिंसा, हमले और अपहरण की घटनाएं जोड़ने से यह संख्या लगभग 36000 प्रति मास हो जाती है। राजधानी दिल्ली में अपराध की दर सबसे अधिक है और यहां औसतन 100 से ज्यादा बलात्कार के मामले सामने आते हैं। महिलाओं की सुरक्षा के लिये प्रभावशाली कानूनी ढांचे का प्रावधान है लेकिन समस्या इसको जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू करने की है। पुलिस की जिम्मेदारी केवल एडवाइजरी जारी करने, प्रतिक्रिया देने व जांच करने तक सीमित नहीं है। अभियोजन और दोषसिद्धि के लिये पुलिस की जवाबदेही निश्चित होनी चाहिए। महिलाओं की सुरक्षा के मुद्दे को केवल कठोर कानून बनाने तक सीमित रखने की बजाये इसके प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर देना होगा।

ऐसे हालात में पुरानी जघन्य घटनाएं ताजा हो जाती हैं। दिसम्बर 2012 का निर्भया कांड देश की उस पीढ़ी की चेतना का हिस्सा बन गया, जिसके विरोध–प्रदर्शन के बाद कानून बदले, फास्ट ट्रैक अदालतें बनीं, निर्भया कोष बना, सजाएं कठोर हुईं। फिर भी 2017 का उन्नाव मामला याद दिलाता है कि जब आरोपी सत्ता के निकट हो तो पीड़िता का परिवार कैसे टूटता है, सबूत कैसे कमजोर पड़ते हैं और न्याय कितना लंबा खिंचता है। 2020 का हाथरस कांड जाति, पुलिस की लापरवाही और शव के अंतिम संस्कार को लेकर उठे सवालों से भरा रहा। ये मामले सिर्फ अपराध नहीं थे, ये राज्य की मशीनरी की विश्वसनीयता की परीक्षा थे।

वहीं नए मामले भी पुरानी कहानी दोहराते हैं। अगस्त 2024 में कोलकाता के आर.जी. कर अस्पताल में डयूटी के बाद आराम कर रही युवा डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या ने पूरे चिकित्सा समुदाय को सड़कों पर ला दिया। एफ.आई.आर. में देरी, सबूतों से छेड़छाड़ के आरोप, अस्पताल प्रशासन की कथित लीपापोती और राजनीतिक आरोप–प्रत्यारोप ने जॉच को और जटिल बना दिया। उच्च न्यायालय को जॉच सी.बी.आई. को सौंपनी पड़ी, सर्वोच्च न्यायालय को स्वतः संज्ञान लेना पड़ा।

जून 2026 में बिहार के बेगूसराय में एक महिला पर उसी के घर में बर्बर हमला हुआ। सितम्बर 2026 में दिल्ली के कालकाजी मंदिर के पास युवकों ने पुलिस होने का नाटक कर किशोरी से दुष्कर्म किया। उसी माह राजधानी में कई नाबालिगों से जुड़े मामले भी सामने आए। बिजनौर थाने में न्याय न मिलने की पीड़ा में एक युवती ने खुद को आग लगा ली। ये घटनाएं अलग–अलग राज्यों की हैं, पर इनका पैटर्न एक है, देरी, दबाव और पीड़िता का अकेला पड़ जाना।

उल्लेखनीय है कि इन मामलों में सबसे बड़ा अवरोध राजनीतिक हस्तक्षेप है। जब आरोपी किसी दल का कार्यकर्त्ता,

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

विधायक या स्थानीय दबंग हो, तो पीड़िता द्वारा थानें में एफ.आई.आर. लिखवाना ही संघर्ष बन जाता है। गवाह मुकर जाते हैं, परिवार को समझौते का दबाव पड़ता है और मीड़िया का शोर थमते ही फाइलें ठंड़ी पड़ जाती हैं। उन्नाव इसका जीवंत उदाहरण रहा। आर.जी. कर मामले में भी राज्य पुलिस की विश्वसनीयता पर अदालतों ने सवाल उठाए। राजनीतिक अपराध को 'कानून–व्यवस्था बनाम विपक्ष' के द्वंद्व में बदल देती है। पीड़िता केंद्र से हट जाती है, सत्ता का बचाव या हमला मुख्य कथानक बन जाता है। पुलिस स्वतंत्र एजेंसी नहीं रह पाती, वह सत्ता की छाया में काम करती दिखती है। जब तक अन्वेषण राजनीतिक रूप से 'सुविधाजनक' नहीं होता, निष्पक्षता संदिग्ध रहती है।

दूसरा बड़ा अवरोध न्यायिक प्रक्रिया की मंद गति है। बलात्कार के मामलों में अदालतों में लंबितता करीब 90 प्रतिशत रही है। 2024 में हजारों मुकदमों में से केवल एक छोटे हिस्से का ही निपटारा हुआ, दोषसिद्धि दर पूर्ण हुए मुकदमों में भी लगभग एक–चौथाई के आसपास बताई गई। 'फास्ट ट्रैक विशेष अदालतें' कागज पर तो तेज हैं, पर देश भर में बलात्कार और पॉक्सो के ढाई लाख से अधिक मामले लंबित बताए गए हैं। कई राज्यों में इन अदालतों की दोषसिद्धि दर चिंताजनक रूप से कम है। पीड़िता सालों तक अदालत के चक्कर काटती है, गवाह थक जाते हैं, सबूत कमजोर पड़ते हैं। 'जस्टिस डिलेयड इज जस्टिस डिनाइड' यह महज एक मुहावरा नहीं, रोजमर्रा की सच्चाई है। कठोर सजा का डर तभी काम करता है जब सजा समय पर और निश्चित लगे। अनिश्चितता अपराधी को हिम्मत देती है।

सरकार का दावा है कि 2024–25 तक निर्भया फंड के लिये आवंटित 7713 करोड़ में से 5846 करोड़ रुपये का उपयोग किया गया, लेकिन इससे अधिक आवश्यक यह सुनिश्चित करना है कि इन परियोजनाओं ने जमीनी स्तर पर कितना काम किया है, कितने असुरक्षित स्थान सुरक्षित हुए और संबंधित एजेंसियों ने कितने मापनीय परिणाम दिये। इसका समाधान नारे से नहीं, व्यवस्था से आएगा।

पहला कदम पुलिस की स्वायत्तता और जवाबदेही है। महिलाओं के विरुद्ध गंभीर अपराधों में एफ.आई.आर. दर्ज करने में देरी को स्वयं दंडनीय लापरवाही माना जाए। जिला स्तर पर स्वतंत्र पर्यवेक्षण और सी.सी.टी.वी, फॉरेंसिक व डिजिटल साक्ष्य की अनिवार्य समयबद्धता जरूरी हो। दूसरा, अन्वेषण राजनैतिक नियंत्रण से बाहर हो। संवेदनशील मामलों में राज्य के बाहर की एजेंसी या विशेष स्वतंत्र इकाई तभी नहीं बुलाई जाए जब मामला गर्म हो, बल्कि यह मानक प्रक्रिया बने। तीसरा, फास्ट ट्रैक अदालतों को वास्तव में तेज बनाने के लिए न्यायाधीश, अभियोजक और फॉरेंसिक क्षमता भी बढ़े। एक साल की वैधानिक समय–सीमा कागज पर न रहे। चौथा, पीड़िता संरक्षण पर भी जौर दिया जाए। सुरक्षित आवास, कानूनी सहायता, गवाह सुरक्षा और मुआवजा आदि मुकदमे के अंत तक सुनिश्चित हो, ताकि वह पारिवारिक समझौते या दबंगई के आगे न झुके।

सार्वजनिक स्थानों, अस्पतालों, परिवहन और डिजिटल प्लेटफार्म पर निगरानी को औचारिकता न बनाया जाए। पुरुषों के समाजीकरण, घर, स्कूल और कार्यस्थल पर सहमति, गरिमा और जवाबदेही को नीति का हिस्सा बनाना होगा। किसी भी दल के नेता पर आरोप हो तो उसी कठोरता से कार्रवाई दिखे, जिससे जनता विश्वास करे कि कानून सबके लिए एक है। इसके लिये पुलिस तंत्र को राजनैतिक व बाहरी हस्तक्षेप से मुक्त करना होगा। जून व अक्तूबर 2026 मास के दौरान देश की राजधानी में जंतर–मंतर पर किये जा रहे विरोध–प्रदर्शनों के दौरान पुलिस तंत्र की कार्यवाही अत्यन्त बर्बरता पूर्ण, अशोभनीय एवं दमनकारी रही, जिसकी हर जगह आलोचना की जा रही है और यह स्पष्ट तौर से महिला विरोधी अपराधियों को बढावा देती है। इस तरह की निरंकुश प्रशासनिक व पुलिसिया कार्यवाही पर तुरंत रोक लगाने की आवश्यकता है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

माटी, मान और मर्यादा-जाट इतिहास की गौरवगाथा

– डा. राजेन्द्र कुमार, (मो० 9897821175)

अक्तूबर का महीना भारतीय जीवन में केवल ऋतु परिवर्तन का समय नहीं है। यह स्मृति, संस्कार, शक्ति, सत्य और आत्मचिंतन का भी महीना है। इस माह में अक्तूबर में गांधी जयंती से लेकर शारदीय नवरात्रि, दुर्गा पूजा और विजयादशमी तक अनेक महत्वपूर्ण अवसर एक साथ आते हैं।

जाट समाज के इतिहास को समझने के लिए सबसे पहले उसकी माटी से जुड़ी जीवन–परंपरा को समझना होगा। खेत, किसान, पशुधन, गांव और सामुदायिक सहयोग इन सबने सामाजिक जीवन को आकार दिया। हमारे पूर्वजों ने कठिन परिस्थितियों में परिश्रम और आत्मनिर्भरता के सहारे जीवन को आगे बढ़ाया। इसलिए माटी का सम्मान वास्तव में श्रम का सम्मान है। माटी केवल जमीन नहीं होती, वह स्मृतियों, परिश्रम और पीढ़ियों के अनुभवों को अपने भीतर संजोए रहती है। जाट समाज की पहचान में कृषि और श्रम का स्थान इसी कारण महत्वपूर्ण रहा है।

जाट इतिहास केवल युद्धों, राजाओं और राजनीतिक संघर्षों की कहानी नहीं है, बल्कि यह माटी से जुड़े जीवन, श्रम, स्वाभिमान, सामाजिक सहयोग और अपनी अस्मिता को बनाए रखने की निरंतर यात्रा का इतिहास भी है। भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों में जाट समुदाय ने कृषि, सैन्य परंपरा, स्थानीय शासन, सामाजिक संगठन और जनजीवन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस गौरवशाली विरासत को समझना केवल अतीत को जानना नहीं, बल्कि वर्तमान को समझने और भविष्य के लिए दिशा निर्धारित करने का माध्यम भी है। जाट समाज की ऐतिहासिक पहचान का एक महत्वपूर्ण आधार भूमि और कृषि से उसका गहरा संबंध रहा है। खेती केवल आजीविका का साधन नहीं रही, बल्कि सामाजिक जीवन, संस्कृति और आत्मनिर्भरता का आधार भी बनी। खेत, खलिहान, पशुधन और ग्राम समुदाय ने जाट जीवन–पद्धति को आकार दिया। माटी से यह जुड़ाव जाट समाज में श्रम के सम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना को मजबूत करता रहा। कठिन परिस्थितियों में भी अपने परिश्रम और सामुदायिक सहयोग के बल पर आगे बढ़ने की परंपरा इस सामाजिक विरासत का महत्वपूर्ण पक्ष है।

इतिहास में जाट समुदाय के अनेक संघर्ष स्थानीय अधिकारों, सम्मान और स्वायत्तता से जुड़े रहे। इन संघर्षों को समझते समय उनके तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है। विभिन्न क्षेत्रों में जाट नेतृत्व ने अपने–अपने समय की परिस्थितियों के अनुसार राजनीतिक संगठन और प्रतिरोध के अलग–अलग रूप अपनाए। जाट इतिहास में स्वाभिमान का अर्थ केवल राजनीतिक शक्ति नहीं, बल्कि अपने श्रम, समुदाय और सामाजिक सम्मान के प्रति जागरूकता भी रहा है। यही भावना अनेक पीढ़ियों तक सामाजिक चेतना का आधार बनी। मध्यकालीन और प्रारंभिक आधुनिक भारत में अनेक स्थानीय शक्तियों का उदय हुआ। इस व्यापक राजनीतिक परिवर्तन के बीच जाट नेतृत्व ने भी विभिन्न क्षेत्रों में अपनी राजनीतिक उपस्थिति स्थापित की। दिल्ली, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान और भरतपुर–ब्रज क्षेत्र में जाट शक्ति के विकास ने उत्तर भारत के राजनीतिक इतिहास को प्रभावित किया।

भरतपुर राज्य का उदय इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है। महाराजा बदन सिंह और महाराजा सूरजमल जैसे शासकों ने राजनीतिक संगठन, कूटनीति और प्रशासन के माध्यम से भरतपुर की शक्ति को सुदृढ़ किया।

महाराजा सूरजमल के शासनकाल को विशेष रूप से उत्तर भारत की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में देखा जाता है। महाराजा सूरजमल जाट इतिहास के प्रमुख शासकों में गिने जाते हैं। उनके समय में मुगल सत्ता के कमजोर होने, मराठा शक्ति के विस्तार और विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों के उभार के बीच उत्तर भारत का राजनीतिक वातावरण अत्यंत जटिल था। सूरजमल की भूमिका को केवल युद्धों के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है। उनकी राजनीतिक नीति में कूटनीति, परिस्थितियों का आकलन, शक्ति संतुलन और व्यावहारिक निर्णय महत्वपूर्ण तत्व थे। उन्होंने बदलते राजनीतिक समीकरणों में भरतपुर राज्य के हितों को सुरक्षित रखने का प्रयास किया। उनकी विरासत हमें यह समझने का अवसर देती है कि किसी भी ऐतिहासिक व्यक्तित्व का मूल्यांकन उसके समय की परिस्थितियों और उपलब्ध विकल्पों के संदर्भ में किया जाना चाहिए।

जाट समाज के इतिहास में ग्राम–आधारित संगठन और सामुदायिक सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय पंचायतों और सामुदायिक संस्थाओं ने सामाजिक जीवन को व्यवस्थित करने में योगदान दिया। खाप जैसी पारंपरिक संस्थाएँ भी उत्तर भारत के सामाजिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण विषय हैं। इनके स्वरूप, कार्य और समय के साथ हुए परिवर्तनों का अध्ययन ऐतिहासिक

मुश्किलें केवल आपकी परीक्षा लेती हैं, हार या जीत का फैसला आपका हौसला करता है।

और सामाजिक संदर्भ में किया जाना चाहिए। आज इन संस्थाओं को समझते समय परंपरा के साथ–साथ आधुनिक संविधान, कानून, समानता और व्यक्तिगत अधिकारों के संदर्भ को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। किसी समाज की वास्तविक प्रगति केवल उसके अतीत की वीरगाथाओं से नहीं, बल्कि शिक्षा, ज्ञान, सामाजिक सुधार और नई पीढ़ी के विकास से भी निर्धारित होती है। मर्यादा मर्यादा हमें यही याद दिलाती है कि अधिकार के साथ कर्तव्य भी होता है, स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी और गौरव के साथ विनम्रता भी। जाट समाज के इतिहास में अनेक ऐसे व्यक्तित्व हुए जिन्होंने कृषि, शिक्षा, सामाजिक सुधार, राजनीति और राष्ट्र निर्माण के क्षेत्रों में योगदान दिया। आधुनिक समय में जाट समाज के लिए ऐतिहासिक चेतना के साथ शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, महिला शिक्षा, युवाओं का कौशल विकास और सामाजिक एकता जैसे विषयों पर ध्यान देना भी महत्वपूर्ण है।

इतिहास हमें गौरव देता है, लेकिन इतिहास का सबसे बड़ा उद्देश्य वर्तमान को बेहतर समझना है। अपने पूर्वजों की उपलब्धियों को याद करते हुए हमें यह भी देखना चाहिए कि आज समाज किन चुनौतियों का सामना कर रहा है। कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन, युवाओं के लिए रोजगार, शिक्षा, तकनीकी कौशल, सामाजिक समरसता और बदलती आर्थिक परिस्थितियाँ आज के महत्वपूर्ण विषय हैं। नई पीढ़ी यदि अपने इतिहास को प्रमाणिक स्रोतों के माध्यम से समझे और आधुनिक ज्ञान के साथ आगे बढ़े, तो विरासत और प्रगति के बीच एक मजबूत संतुलन बनाया जा सकता है। जाट इतिहास की गौरवगाथा केवल स्मरण करने के लिए नहीं, बल्कि उससे प्रेरणा लेने के लिए है। हमारे पूर्वजों की सबसे बड़ी सीखों में परिश्रम, साहस, संगठन, आत्मसम्मान और परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय लेने की क्षमता शामिल हैं। नई पीढ़ी का दायित्व है कि वह इतिहास को केवल गौरव कथाओं तक सीमित न रखे, बल्कि उसे शोध, प्रमाण और आलोचनात्मक दृष्टि से समझे। पुस्तकालयों, अभिलेखागारों, पुरालेखों और प्रमाणिक ऐतिहासिक स्रोतों के अध्ययन को बढ़ावा देना आवश्यक है।

गौरवशाली अतीत हमारी प्रेरणा हो सकता है, लेकिन हमारा भविष्य वर्तमान के कर्मों से निर्मित होगा। इसलिए इतिहास की विरासत को सम्मान देते हुए शिक्षा, शोध, सामाजिक सहयोग और राष्ट्र निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना ही इस विरासत को सार्थक बनाने का मार्ग है। अपने इतिहास पर गर्व करना स्वाभाविक है, लेकिन इतिहास के प्रति सच्चा सम्मान तभी है जब हम उसे प्रमाणिक स्रोतों, दस्तावेजों, अभिलेखों और शोध के आधार पर समझें।

नई पीढ़ी के सामने आज सूचना की कमी नहीं है, चुनौती सही और गलत सूचना में अंतर करने की है। इसलिए जाट इतिहास के अध्ययन में पुस्तकों, अभिलेखागारों, शोध–पत्रों और प्रमाणित ऐतिहासिक स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। गौरव और शोध एक–दूसरे के विरोधी नहीं हैं। बल्कि प्रमाणिक इतिहास ही आने वाली पीढ़ियों को स्थायी गौरव दे सकता है। आज का युवा केवल अपने गांव या समाज का प्रतिनिधि नहीं है. वह डिजिटल और वैश्विक दुनिया का हिस्सा है। इसलिए हमारी नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए आधुनिक शिक्षा और तकनीक को अपनाना होगा। कृषि में नई तकनीक, उच्च शिक्षा, उद्यमिता, खेल, प्रशासन, विज्ञान और विभिन्न पेशों में युवाओं की भागीदारी समाज की नई दिशा निर्धारित कर सकती है। हमारे पूर्वजों की उपलब्धियां हमारे लिए प्रेरणा हैं, लेकिन हमारी अपनी उपलब्धियां ही आने वाली पीढ़ियों की विरासत बनेंगी।

किसी भी समाज का विकास केवल व्यक्तिगत सफलता से नहीं होता। शिक्षा, सामाजिक सहयोग, कमजोर वर्गों का समर्थन, महिलाओं और युवाओं की भागीदारी तथा सामुदायिक संस्थाओं की सकारात्मक भूमिका समाज को मजबूत बनाती है। आज आवश्यकता ऐसी सामाजिक चेतना की है जिसमें परंपरा का सम्मान हो, लेकिन आधुनिक संवैधानिक मूल्यों, समानता, कानून और व्यक्तिगत गरिमा का भी पूरा सम्मान किया जाए। हम अपने पूर्वजों की विरासत को आने वाली पीढ़ी के लिए किस रूप में छोड़ेंगे? क्या हमारी विरासत केवल स्मारकों और पुस्तकों में रहेगी? या फिर वह शिक्षा, चरित्र, परिश्रम, सामाजिक जिम्मेदारी और राष्ट्र निर्माण के रूप में हमारे वर्तमान जीवन में दिखाई देगी?

उत्तर हमारे आज के कर्मों में छिपा है।

अंततः...

माटी हमें अपनी जड़ों से जोड़ती है। मान हमें आत्मसम्मान का बोध कराता है। मर्यादा हमें अपनी जिम्मेदारी याद दिलाती है। और इतिहास हमें बताता है कि समय कभी स्थिर नहीं रहता।

इसलिए आइए, इस अक्तूबर में हम अपने इतिहास को केवल गर्व से न पढ़ें, बल्कि उससे सीखें। अपने पूर्वजों को केवल स्मरण न करें, बल्कि उनके जीवन से मिलने वाले सकारात्मक मूल्यों को अपने आचरण में उतारें।

अतीत हमारी पहचान है, वर्तमान हमारी जिम्मेदारी है और भविष्य हमारी अगली पीढ़ी के हाथों में है। मान को बनाए रखें। मर्यादा को जीवन में उतारें और इतिहास से प्रेरणा लेकर भविष्य का निर्माण करें।

जब जाटों ने किया अंग्रेजों का सूर्यास्त

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत) (मो० 9466110050)

महाराजा केहरी सिंह के बाद 1777 ई० में भरतपुर राज्य की कमान महाराजा रणजीत सिंह ने सम्भाली। इनका जन्म 2 मई 1745 ई० में हुआ था। ये महाराजा जवाहर सिंह के भाई और महाराजा सूरजमल के तीसरे पुत्र थे।

भरतपुर में अंग्रेजों के खून से लाल कर दी थी ब्रज की धरा.
13 बार अंग्रेजी शासन की पगड़ी को पैरों के नीचे कुचला..

महाराजा रणजीत सिंह (2 मई 1745 – 6 दिसम्बर 1805) भरतपुर रियासत के महाराजा (शासनकाल 1778–1805) थे। वो महाराजा केहरी सिंह के उत्तराधिकारी थे।

कलकत्ता से इंग्लैंड तक टपके अंग्रेजों के आंसू

बात 1805 की है जब भरतपुर के महाराजा रणजीत सिंह जी को यह ज्ञात हुआ कि अंग्रेज भारत में गौ मांस खाते हैं तो उन्होंने तुरंत अंग्रेजों से संधि तोड़ दी और उन्होंने अंग्रेजों से सारे सम्बन्ध तोड़ने के साथ अपने राज्य में बिना आज्ञा घुसने पर प्रतिबंध लगा दिया।

उसी समय मराठा सेनापति यशवंत राव होल्कर अंग्रेजो से युद्ध कर रहा था। अंग्रेजी सेना ने उन्हें घेरने का प्रयास किया तो वे भागकर भरतपुर राज्य की सीमा में घुस गए... और उन्होंने अपने मित्र भरतपुर महाराज से शरण मांगी। महाराज श्री ब्रिजेन्द्र सवाई रणजीत सिंह जी को पता चला तो वे तुरंत अपने मित्र होल्कर को अपने दरबार में ले आये। जब अंग्रेजों को पता चला तो उन्हें काफी आश्चर्यजनक लगा। उन्होंने भरतपुर दरबार को चिट्ठी भेजी कि या तो होल्कर को छोड़ दें या फिर युद्ध के लिए तैयार रहे।

अंग्रेजों की इस धमकी का महाराज पर कोई असर न हुआ। उन्होंने कहा कि होल्कर मेरी शरण में आया है और शरणागत के लिए हम भारतीय अपने प्राणों तक की बाजी लगा सकते हैं, होल्कर मेरा मित्र भी है तुम नीच गौभक्षकों से मैं युद्ध करने के लिए आतुर हूँ।

यह सुनकर अंग्रेजी सेना ने क्रोधित होकर 2 जनवरी 1805 को भरतपुर पर आक्रमण कर दिया... यह युद्ध अप्रैल 1805 तक जारी रहा। तीन महीने चले इस युद्ध को महाभारत का आधुनिक संस्करण कहा जाता है। इस दौरान अंग्रेजों ने लोहगढ़ पर कुल 13 आक्रमण किये और 13 के 13 बार उन्हें मुंह की खानी पड़ी।

महाराज रणजीत सिंह और यशवंत राय होल्कर के निर्देशन में भरतपुर के मात्र 10,000 जाट यौद्धाओं ने 20 हजार अंग्रेजों को बुरी तरफ से मारा। लगभग साढ़े तीन हजार अंग्रेज इस युद्ध में मारे गए।

अंग्रेज स्वयं लिखते हैं कि जाट सैनिक इतने जोशीले भाव में लड़ रहे थे कि हम 60 यार्ड से उन्हें गोली मार रहे थे पर वे बचने के लिए एक बार भी सिर नीचे नहीं झुका रहे थे। ऐसा लग रहा था कि मानो गोली उन तक पहुंच ही न रही हो।

अंग्रेजों ने यह भी लिखा कि उन्हें युद्ध के समय भरतपुर में देवी शक्ति के दर्शन हुए। भरतपुर की कुलदेवी हाथ में भगवा ध्वज लिए किले की रक्षा कर रही थी।

एक अंग्रेज लेफ्टिनेंट टेम्पलटन जैसे तैसे ब्रितानी झंडा लेकर किले की दीवार पर गाड़ने जा पहुंचा। भरतपुर के सैनिकों ने उसे घेर लिया। जाटों ने उसे मारा नहीं बल्कि उसकी जूतों से पिटाई की। झंडे को जूतों तले रौन्दा और सैनिक को झंडे समेत नीचे खाई में फेंक दिया जहां दलदल में धसकर वह मर गया।

अंग्रेजों ने 4 बड़े हमलों के बारे में विस्तार से लिखा है...

उन्होंने बताया कि 9 जनवरी की रात को कर्नल रेयान, मेजर हॉक्स और लेफ्टिनेंट कर्नल मेटलैंड ने भरतपुर पर तीन ओर से एक साथ हमला किया। भारी गोलाबारी से किले की एक दीवार में छेद हो गया लेकिन जैसे ही अंदर घुसने की कोशिश की तो आगे जाट सैनिक यमराज बनकर उन पर टूट पड़े। इस युद्ध में 400 अंग्रेज मारे गए और मेटलैंड घायल होकर गिर पड़ा। हमने जैसे तैसे अपनी जान बचाई। कई सैकड़ों सैनिक घायल अवस्था में कहरा रहे थे।

हमने 16 जनवरी को एक आक्रमण किया जिसमें 500 अंग्रेज मारे गए जिसमे एक सेनापति लेफ्टिनेंट कर्नल मैकरॉय को भी भरतपुर के सैनिकों ने मौत के घाट उतार दिया। अंग्रेजी सेना के हजार के लगभग सैनिक घायल हो गए थे।

21 जनवरी के आक्रमण के दौरान अंग्रेजों ने भारी गोलाबारी की जिससे किले की दीवार के कुछ हिस्से टूट गए। लेकिन किसी भी अंग्रेज सैनिक की आगे बढ़ने की हिम्मत न हुई। क्योंकि वे जानते थे कि वे दीवार पार तो कर देंगे लेकिन आगे खड़े जाटों के पास पहुंचने पर वापिस जीवित न आ पाएंगे।

कभी–कभी अजनबी होना भी जरूरी होता है क्योंकि सब कुछ जानना दिमागी तनाव ही बढ़ाता है।

अंग्रेज लिखते हैं कि सबसे भयानक तो ये था कि किले की दीवारों पर जाटों से लड़कर घायल होने वाले अंग्रेजी सैनिक नीचे खाई में जा गिरते व निकल नहीं पा रहे थे। और बाद में समय मिलने पर जाट सैनिक नीचे आते और उन्हें मौत के घाट उतार देते थे।

6 फरवरी के आक्रमण के दौरान अंग्रेजों ने सुरंग बनाई लेकिन जाटों को पता चल गया और सुरंग के मुहाने पर खड़े जाटों ने एक एक को काट दिया।

21 फरवरी के आक्रमण के दौरान अंग्रेजों ने जान की बाजी लगा दी उन्होंने एक दूसरे के कंधे पर चढ़कर दीवार पर चढ़ने की कोशिश की। जाटों ने अंग्रेजों पर गोलियां व्यर्थ न करके पत्थर बरसाने शुरू कर दिए सब सैनिक घायल होकर भाग खड़े हुए। एक तरफ गोलाबारी से कुछ छेद हुए लेकिन वहां पहुंचने वाले अंग्रेजों को भी जाटों ने मौत के घाट उतार दिया।

इस तरह कुल 13 आक्रमणों में साढ़े 3 हजार ब्रिटिश सैनिक मारे गए जिनमें बड़ी संख्या में बड़े अधिकारी शामिल थे और लगभग 8 हजार ब्रितानी सैनिक घायल हुए। ऐसा कोई सैनिक न बचा था जिसे कहीं चोट न लगी हो।

कहते हैं कि जाटों ने अंग्रेजों को कलकत्ता तक रुलाया था। जाट भरतपुर में अंग्रेजों को मार रहे थे और उनके परिवार व ईस्ट इंडिया कम्पनी की चीखें तत्कालीन राजधानी कलकत्ता से निकल रही थी।

अंग्रेज सेनापतियों ने दूर डेरे डाले और फिर प्रशासन को समझाया कि यहां हमारा सूर्यास्त हो चुका है अगर अब और लड़े तो बहुत दुष्परिणाम होंगे।

लार्ड लेक ने स्वयं इंग्लैंड में वेलजली को पत्र लिखते हुए कहा कि हमें लगता था कि हम भरतपुर को आसानी से जीत लेंगे लेकिन यह हमारी भूल थी। हम हार रहे हैं अब और आगे लड़े तो हमें इतना नुकसान होगा कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

उस समय भरतपुर कोई बड़ा राज्य न रह गया था। दिल्ली के बादशाह व रुहेले एवं पठानों से लड़ने के कारण महाराज रणजीत सिंह का कोष पहले से ही खाली था।

अंग्रेजों ने संधि का प्रस्ताव भेजा, भरतपुर के कुलपुरोहित एवं मंत्रियों ने संधि को स्वीकृत करने के लिए महाराज पर दबाव डाला क्योंकि राज्य के आर्थिक हालात कमजोर थे।

उधर अंग्रेज भी पड़ोसी राज्यों के माध्यम से महाराज पर दबाव बना रहे थे।

हालांकि युद्ध और चलता तो भरतपुर की सेना का गोला बारूद खत्म होने की कगार पर था जिसके दुष्परिणाम हो सकते थे।

इसलिए अंत में संधि की गई कि अंग्रेज भरतपुर पर कभी आक्रमण न करेंगे। और गौहत्या करने की हिम्मत न करेंगे।

महाराज रणजीत सिंह ने इस युद्ध की याद में फतेह बुर्ज का निर्माण किया था।

इन युद्ध की इतनी ख्याति फैल गयी थी कि ब्रिज कवि से लेकर पूरे राजस्थान के कवि भरतपुर का उदाहरण देकर अपने क्षेत्र व राज्यों के प्रतिनिधियो को जगाने का प्रयास करने लगे थे....

जोधपुर के राज कवि बांकीदास जी ने लिखा कि

पूरा जोधड़, उदैपुर, जैपुर, पहूँ थारा खूटा परियाणा।
कायरता से गई आवसी नहीं बाकें आसल किया बखाणा।।
बजियाँ भलो भरतपुर वालो, गाजै गरज धरज नभ भौम।
पैलां सिर साहब रो पडिघ्यो, भड उभै नह दीन्हीं भौम ।।

अर्थ है कि "हे जोधपुर, उदयपुर और जयपुर के मालिको ! तुम्हारा तो वंश ही खत्म हो गया। कायरता से गई भूमि कभी वापिस नहीं आएगी, बांकीदास ने यह सच्चाई वर्णन की है। भरतपुर वाला जाट तो खूब लड़ा। तोपें गरजीं, जिनकी धूम आकाश और पृथ्वी पर छाई थी। अंग्रेजों के सिर काट डाले, लेकिन खड़े–खड़े अपनी भूमि नहीं दी।"

महाराजा रणजीत सिंह ने गौरक्षा, शरणागत की रक्षा, मित्रता एवं देश और राज्य के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया था और अंग्रेजों को दिखा दिया था कि हम किसी से कम नहीं हैं। महाराज रणजीत सिंह जी ने अंग्रेजों से पहले दिल्ली की मुगल सत्ता, पठान व रुहेलों के खिलाफ भी युद्ध लड़े और धर्म रक्षा करते हुए भगवा ध्वज की शान बढ़ाने का निरंतर प्रयास किया।

बड़े खेद की बात है कि कर्नल जैम्सटॉड ने अपनी पुस्तक "राजस्थान का इतिहास" में लार्डलेक की इस करारी हार और जाटों की अद्धितीय वीरता और जीत का जिक्र तक भी नहीं किया, जबकि वह इस युद्ध के समय अपने मुख्य कार्यालय उदयपुर में ही थे। भरतपुर युद्ध के 8 मास पश्चात् दिसम्बर 1805 ई० में महाराजा रणजीत सिंह का स्वर्गवास हो गया। उसके पश्चात् उनके 4 पुत्रों में सबसे बड़े राजकुमार रणधीर सिंह ने भरतपुर राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली।

पुरकाजी में फांसी पर लटकाये गये थे 38 जाट क्रांतिकारी

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की ज्वाला प्रज्वलित करने में सबसे प्रमुख स्थान यदि किसी का है, तो वह है तत्कालीन पांच महान संतों–गुरु विरजानन्द, उनके शिष्य महर्षि दयानन्द, स्वामी ओमानन्द, स्वामी पूर्णानन्द और संत गंगादास तथा हरियाणा सर्वखाप पंचायत के वीरों का। वास्तविकता यह है कि इन्हीं के कारण भारत की जनता स्वाधीनता संग्राम लड़ने को उद्यत हो सकी थी।

हरियाणा सर्वखाप पंचायत के क्षेत्र में वर्तमान हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश का समस्त जाट क्षेत्र आता था। नाम के अनुरूप हरियाणा सर्वखाप पंचायत में यूं तो सभी वर्गों–जातियों के लोग सम्मिलित थे, किंतु इस पंचायत में मुख्य रूप से जाट ही सर्वेसर्वा थे। ज्ञातव्य है कि संत गंगादास भी जाट थे जो वर्तमान गाजियाबाद जनपद के गांव रसूलपुर (हापुड़) के निवास थे। किंतु इनका कार्यक्षेत्र सर्वखाप पंचायत नहीं था, अपितु ये उस समय कानपुर, झांसी और बिठूर क्षेत्र में स्वतंत्रता की अलख जगाने में अति सक्रिय रहे थे।

सौरम और सिसौली सर्वखाप पंचायत के दो प्रमुख गांव रहे हैं। सौरम में तो सर्वखाप पंचायत का मुखिया निवास करता था, जबकि सिसौली में अति प्रमुख बालियान खाप के चौधरी का निवास था।

हरियाणा सर्वखाप पंचायत के वीर मराठों का साथ देने के लिए अहमदशाह अब्दाली जैसे दुर्दात आततायी से भी भिड़े थे। इस तथ्य को भारत को आजाद कराने की तीव्र इच्छा लिये गांव–गांव घूम रहे संत अच्छी तरह जानते थे। इसी कारण उन्होंने सर्वखाप पंचायत के योद्धाओं और उसके पदाधिकारियों में क्रांति के विषय में कई बार सम्पर्क कर विचार–विमर्श किया था। स्वयं आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द और उनके गुरु स्वामी विरजानन्द कई बार सर्वखाप पंचायत के मुखियाओं से मिलने सौरम गये थे।

हरियाणा सर्वखाप पंचायत के अभिलेखों के अनुसार इन संतों ने स्वाधीनता संग्राम की तिथि तो कई वर्ष निर्धारित कर दी थी। इस अभिलेखागार के अनुसार इन संतों ने जंगे आजादी से पांच वर्ष पूर्व पंचायत के बुजुर्गों को बता दिया था कि 31 मई 1857 को अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए निर्णायक युद्ध लड़ा जायेगा।

ये संत हरिद्वार, गढ़मुक्तेश्वर, मथुरा, मेरठ तथा मुफरनगर में घूम–घूमकर लोगों में देश भक्ति की भावनाएं जगा रहे थे। साथ ही ये संत देसी सेनाओं के हिन्दू और मुसलमान सैनिकों के दिलों में भी क्रांति की आग भरने का महती कार्य कर रहे थे।

स्वामी विरजानन्द को भारत के समस्त साधु समाज ने भारत गुरुदेव की उपाधि से विभूषित किया था। इन्होंने क्रांति के प्रतीकों का चयन किया था, जिनके माध्यम से क्रांति का संदेश एक से दूसरे तक पहुंचाया जाता था। उन्होंने कमल–रोटी, रोटी और रेशम, खरबूजा और तीतर को क्रांति के संदेशों के प्रतीक के रूप में चुना था।

यूं तो समस्त हरियाणा सर्वखाप पंचायत ने स्वाधीनता संग्राम में बढ़–चढ़कर भाग लिया था, किंतु यदि यह कहा जाए कि इसमें सबसे अधिक योगदान मुजफरनगर जनपद के जाटों का रहा, तो यह अतिशयोक्ति न होगी। यह भी सच है कि जंगे आजादी के लिए लड़ने वाली देसी सेनाओं का साथ देने के लिए सबसे अधिक सर्वखाप पंचायत ने ही अपने बहादुर नौजवान व मल्ल दिल्ली भेजे थे। सर्वखाप पंचायत ने इन सेनाओं के खाने–पीने के लिए भोज्य सामग्री भेजने में कोई कसर उठा नहीं रखी थी। बादशाह बहादुरशाह कर का इतिहास लेखक जाहीर 28 जून 1857 के अपने आलेख में लिखता है–

आज 28 जून को हरयाणा के जवान दिल्ली की फोजों के वास्ते घी का चुर्मा व पूड़े लेकर आये थे और फौजों की दावत कर फौज की हौसला अफजाई की। बड़े पैमाने पर फौज को खाना खिलाकर खाण्ड का शर्बत भी पिलाया था। हरयाणा सर्वखाप पंचायत की फौज ने आज भी अंग्रेजों की फौज का मोर्चा तोड़कर एक पलटन बेकार कर दी और उसका सारा सामान असलाह वगैरह छीन लिया। आज सर्वखाप पंचायत के भाटों और मिरासियों ने अपने गीत और साखे सुना–सुनाकर फौज का जोश–ओ–खरोश बढ़ाया। सारे दिन अंग्रेजी फौज बढ़–चढ़कर हमले करती रही और आखिर में उसे भारतीय सेना ने मोर्चे से तीन मील पीछे धकेल दिया। इस लड़ाई में दिल्ली की फौज को 250 बन्दूकें, 500 तलवारें और 200 नेजे हाथ लगे। हरयाणा वासी आज भी जीत गये।

जो प्रभु के चरणों में शांति ढूंढ ले उसे दुनिया का शोर परेशान नहीं कर सकता।

जहीर (28 जून 1857)

मुजफरनगर के गांव–गांव और हर कस्बे से वीर पुरुष दिल्ली अंग्रेजों से लड़ने पहुंचे थे। सर्वखाप पंचायत के केन्द्र सौरम के रिकार्ड के अनुसार पुरकाजी से सैकड़ों युवा दिल्ली युद्ध लड़ने पहुंचे थे। बहुत से युवकों ने पुरकाजी में रहकर ही अंग्रेजों का सामना किया और उन्हें भरपूर हानि पहुंचायी थी।

स्वाधीनता संग्राम की विफलता के बाद अंग्रेजों का दमन चक्र सबसे अधिक मुजफरनगर के वीर सेनानियों पर ही चला था। उन्होंने पूरे मुजफरनगर जनपद से क्रांति में शामिल होने वाले लगभग पांच सौ वीर क्रांतिकारियों को दण्डित करने के लिए पुरकाजी कस्बे में ले जाकर सूली वाला बाग के नाम से प्रसिद्ध बाग में फांसी पर लटकाया था। अंग्रेजों का क्रांतिकारियों को सूली पर लटकाने का तरीका अत्यंत ही क्रूर था। इससे क्षेत्र में भय का वातावरण बन गया था। इस बाग में फांसी पर लटकाये जिन 74 लोगों के नाम प्राप्त हुए हैं, उनमें लगभग 28 जाट थे और 10 युवा जाट स्त्रियां भी थीं। जिन जाट वीरों को इस स्थान पर फांसी दी गयी, उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं–

शोभा देवी, आशा देवी, राजकौर, भगवती, रणवीरी, सिमरन कौर, मामकौर, भगवानी, इन्द्रकौर, सहजो, अमीर सिह, भगवान सिह, प्रीतम सिंह, शोभाराम बालियान, मेदा सिंह, साधुराम, भगवान सिंह, मोहकम सिंह, अजब सिंह, सगवा सिंह, हरपाल सिंह, मेघराज सिंह, खुशहाल सिंह, नेतराम, शिवदयाल सिंह भवानी सिंह, मेहरा सिंह, अजब सिंह, अमीचंद मेघराज सिह और लक्षमण सिंह।

मिसाईल मैन भारत रत्न प्रख्यात वैज्ञानिक तथा भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

जो मिसाइल मैन (अंग्रेजी: Missile Man) और जनता के राष्ट्रपति (अंग्रेजी : People's President) नाम से भी जाने जाते हैं, भारतीय गणतन्त्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे।वे भारत के पूर्व राष्ट्रपति, प्रख्यात वैज्ञानिक और अभियन्ता के रूप में विख्यात थे। उन्होंने सिखाया जीवन में चाहें जैसे भी परिस्थिति क्यों न हो पर जब आप अपने सपने को पूरा करने की ठान लेते हैं तो उन्हें पूरा करके ही रहते हैं। अब्दुल कलाम के विचार आज भी युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

इन्होंने मुख्य रूप से एक वैज्ञानिक और विज्ञान के व्यवस्थापक के रूप में चार दशकों तक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) संभाला व भारत के नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम और सैन्य मिसाइल के विकास के प्रयासों में भी उपस्थित रहे। इन्हें बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के विकास के कार्यों के लिए भारत में "मिसाइल मैन" के रूप में जाना जाता है।

इन्होंने 1974 में भारत द्वारा प्रथम मूल परमाणु परीक्षण के बाद से द्वितीय बार 1998 में भारत के पोखरान–द्वितीय परमाणु परीक्षण में एक निर्णायक, संगठनात्मक, तकनीकी और राजनैतिक भूमिका निभाई।

कलाम सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी एवं विपक्षी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों के समर्थन सहित 2002 में भारत के राष्ट्रपति चुने गए। पाँच वर्ष की अवधि की सेवा के बाद, वह शिक्षा, लेखन और सार्वजनिक सेवा के अपने नागरिक जीवन में लौट आए। इन्होंने भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किये।

15 अक्टूबर 1931 को धनुषकोडी गाँव (रामेश्वरम, रामनाथपुरम, तमिल नाडु) में एक मध्यमवर्ग मुस्लिम अंसार परिवार में इनका जन्म हुआ। इनके पिता जैनुलाब्दीन न तो अधिक पढ़े–लिखे थे, न ही पैसे वाले थे। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। परिवार की सदस्य संख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि यह स्वयं पाँच भाई एवं पाँच बहन थे और घर में तीन परिवार रहा करते थे। अब्दुल कलाम के जीवन पर इनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले ही पढ़े–लिखे नहीं थे, किन्तु उनकी लगन और उनके दिए संस्कार अब्दुल कलाम के बहुत काम आए।

पाँच वर्ष की आयु में रामेश्वरम की पंचायत के प्राथमिक विद्यालय में उनका दीक्षा–संस्कार हुआ था। उनके शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने उनसे कहा था कि जीवन मे सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीन शक्तियो को भलीभाँति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए।

पांचवी कक्षा में पढ़ते समय उनके अध्यापक उन्हें पक्षी के उड़ने के तरीके की जानकारी दे रहे थे, किन्तु जब छात्रों

खामोश रहने का अपना ही मजा है क्योंकि नींव के पत्थर बोला नहीं करते।

को समझ नही आया तो अध्यापक उनको समुद्र तट ले गए जहाँ उड़ते हुए पक्षियों को दिखाकर अच्छे से समझाया, इन्ही पक्षियों को देखकर कलाम ने तय कर लिया कि उनको भविष्य में विमान विज्ञान में ही जाना है। कलाम के गणित के अध्यापक सुबह ट्यूशन लेते थे इसलिए वह सवेरे 4 बजे गणित की ट्यूशन पढ़ने जाते थे।

अब्दुल कलाम ने अपनी आरम्भिक शिक्षा जारी रखने के लिए अखबार वितरित करने का कार्य भी किया था। कलाम ने 1950 में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। स्नातक होने के बाद उन्होंने हावरक्राफ्ट परियोजना पर काम करने के लिये भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान में प्रवेश लिया। 1962 में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आये जहाँ उन्होंने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं में अपनी भूमिका निभाई। परियोजना निदेशक के रूप में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एसएलवी 3 के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे जुलाई 1982 में रोहिणी उपग्रह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया था।

1972 में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन से जुड़े। अब्दुल कलाम को परियोजना महानिदेशक के रूप में भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह (एस.एल.वी. तृतीय) प्रक्षेपास्त्र बनाने का श्रेय हासिल हुआ। 1980 में इन्होंने रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित किया था। इस प्रकार भारत भी अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब का सदस्य बन गया। इसरो लॉन्च व्हीकल प्रोग्राम को परवान चढ़ाने का श्रेय भी इन्हें प्रदान किया जाता है। कलाम ने स्वदेशी लक्ष्य भेदी नियंत्रित प्रक्षेपास्त्र (गाइडेड मिसाइल्स) को डिजाइन किया। इन्होंने अग्नि एवं पृथ्वी जैसे प्रक्षेपास्त्रों को स्वदेशी तकनीक से बनाया था। कलाम जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार तथा सुरक्षा शोध और विकास विभाग के सचिव थे। उन्होंने रणनीतिक प्रक्षेपास्त्र प्रणाली का उपयोग आग्नेयास्त्रों के रूप में किया। इसी प्रकार पोखरण में दूसरी बार परमाणु परीक्षण भी परमाणु ऊर्जा के साथ मिलाकर किया। इस तरह भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की क्षमता प्राप्त करने में सफलता अर्जित की। कलाम ने भारत के विकासस्तर को 2020 तक विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने के लिए एक विशिष्ट सोच प्रदान की। यह भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार भी रहे। 1982 में वे भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान में वापस निदेशक के तौर पर आये और उन्होंने अपना सारा ध्यान "गाइडेड मिसाइल" (अंग्रेजीः Guided Missile) के विकास पर केन्द्रित किया। अग्नि मिसाइल और पृथ्वी मिसाइल का सफल परीक्षण का श्रेय काफी कुछ उन्हीं को है। जुलाई 1992 में वे भारतीय रक्षा मंत्रालय में वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त हुये। उनकी देखरेख में भारत ने 1998 में पोखरण में अपना दूसरा सफल परमाणु परीक्षण किया और परमाणु शक्ति से संपन्न राष्ट्रों की सूची में शामिल हुआ।

निर्विरोध राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एन०डी०ए० घटक दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया था जिसका वामदलों के उपरान्त समस्त दलों ने समर्थन किया। 18 जुलाई 2002 को कलाम को निर्विरोध भारत का राष्ट्रपति चुना गया था और इन्हें 25 जुलाई 2002 को संसद भवन के अशोक कक्ष में राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गई। इस संक्षिप्त समारोह में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, उनके मंत्रिमंडल के सदस्य तथा अधिकारीगण उपस्थित थे। इनका कार्याकाल 25 जुलाई 2007 को समाप्त हुआ। अब्दुल कलाम व्यक्तिगत जिन्दगी में बेहद अनुशासनप्रिय थे। यह शाकाहारी थे। इन्होंने अपनी जीवनी विंग्स ऑफ फायर भारतीय युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करने वाले अंदाज में लिखी है। इनकी दूसरी पुस्तक "गाइडिंग सोल्स– डायलॉग्स ऑफ द पर्पज ऑफ लाइफ" आत्मिक विचारों को उद्घाटित करती है इन्होंने तमिल भाषा में कविताऐं भी लिखी हैं। यह भी ज्ञात हुआ है कि दक्षिणी कोरिया में इनकी पुस्तकों की काफी माँग है और वहाँ इन्हें बहुत अधिक पसंद किया जाता है।

यूं तो अब्दुल कलाम राजनीतिक क्षेत्र के व्यक्ति नहीं थे लेकिन राष्ट्रवादी सोच और राष्ट्रपति बनने के बाद भारत की कल्याण संबंधी नीतियों के कारण इन्हें कुछ हद तक राजनीतिक दृष्टि से सम्पन्न माना जा सकता है। इन्होंने अपनी पुस्तक इण्डिया 2020 में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। यह भारत को अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया का सिरमौर राष्ट्र बनते देखना चाहते थे और इसके लिए इनके पास एक कार्य योजना भी थी। परमाणु हथियारों के क्षेत्र में यह भारत को सुपर पॉवर बनाने की बात सोचते रहे थे। वह विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी तकनीकी विकास चाहते थे। कलाम का कहना था कि "सॉफ्टवेयर" का क्षेत्र सभी वर्जनाओं से मुक्त होना चाहिए ताकि अधिकाधिक लोग इसकी उपयोगिता से लाभांवित हो सकें। ऐसे में सूचना तकनीक का तीव्र गति से विकास हो सकेगा। वैसे इनके विचार शांति और हथियारों को लेकर विवादास्पद हैं।

कार्यालय छोड़ने के बाद, कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलोंग, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर व भारतीय विज्ञान संस्थान,बैंगलोर के मानद फैलो, व एक विजिटिंग प्रोफेसर बन गए। भारतीय अन्तरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुवनंतपुरम के कुलाधिपति, अन्ना विश्वविद्यालय में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर और भारत भर में कई अन्य शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों में सहायक बन गए। उन्होंने बनारस हिंदू

विश्वविद्यालय और अन्ना विश्वविद्यालय में सूचना प्रौद्योगिकी, और अंतरराष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान हैदराबाद में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पढ़ाया।

मई 2012 में, कलाम ने भारत के युवाओं के लिए एक कार्यक्रम, भ्रष्टाचार को हराने के एक केंद्रीय विषय के साथ, "मैं आंदोलन को क्या दे सकता हूँ" का शुभारंभ किया। उन्होंने यहाँ तमिल कविता लिखने और वेन्नई नामक दक्षिण भारतीय स्ट्रिंग वाद्य यंत्र को बजाने का भी आनंद लिया।

कलाम कर्नाटक भक्ति संगीत हर दिन सुनते थे और हिंदू संस्कृति में विश्वास करते थे। इन्हें 2003 व 2006 में "एमटीवी यूथ आइकन ऑफ द इयर" के लिए नामांकित किया गया था।

इन पर 2011 में आई हिंदी फिल्म आई एम कलाम में, एक गरीब लेकिन उज्ज्वल बच्चे पर कलाम के सकारात्मक प्रभाव को चित्रित किया गया। उनके सम्मान में वह बच्चा छोटू जो एक राजस्थानी लड़का है खुद का नाम बदल कर कलाम रख लेता है। 2011 में, कलाम कुडनकुलम परमाणु संयंत्र तथा ऊर्जा संयंत्र की स्थापना का समर्थन किया।

27 जुलाई 2015 की शाम अब्दुल कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलोंग में "रहने योग्य ग्रह" पर एक व्याख्यान दे रहे थे जब उन्हें जोरदार कार्डियक अरेस्ट (दिल का दौरा) पड़ा और ये बेहोश हो कर गिर पड़े। लगभग 6:30 बजे गंभीर हालत में इन्हें बेथानी अस्पताल में आईसीयू में ले जाया गया और दो घंटे के बाद इनकी मृत्यु की पुष्टि कर दी गई। अस्पताल के सीईओ डॉ० जॉन साइलो ने बताया कि जब कलाम को अस्पताल लाया गया तब उनकी नब्ज और ब्लड प्रेशर साथ छोड़ चुके थे। अपने निधन से लगभग 9 घण्टे पहले ही उन्होंने ट्वीट करके बताया था कि वह शिलोंग आईआईएम में लेक्चर के लिए जा रहे हैं।

कलाम अक्टूबर 2015 में 84 साल के होने वाले थे। मेघालय के राज्यपाल वी० शडमुखनाथनय अब्दुल कलाम के हॉस्पिटल में प्रवेश की खबर सुनते ही सीधे अस्पताल में पहुँच गए। बाद में शडमुखनाथन ने बताया कि कलाम को बचाने की चिकित्सा दल की कोशिशों के बाद भी शाम 7:45 पर उनका निधन हो गया।

मृत्यु के तुरंत बाद कलाम के शरीर को भारतीय वायु सेना के हेलीकॉप्टर से शिलांग से गुवाहाटी लाया गया। जहाँ से अगले दिन 28 जुलाई को पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम का पार्थिव शरीर मंगलवार दोपहर वायुसेना के विमान सी–130जे हरक्यूलिस से दिल्ली लाया गया। लगभग 12:15 पर विमान पालम हवाईअड्डे पर उतरा। सुरक्षा बलों ने पूरे राजकीय सम्मान के साथ कलाम के पार्थिव शरीर को विमान से उतारा। वहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल व तीनों सेनाओं के प्रमुखों ने इसकी अगवानी की और कलाम के पार्थिव शरीर पर पुष्पहार अर्पित किये।

इसके बाद तिरंगे में लिपटे कलाम के पार्थिव शरीर को पूरे सम्मान के साथ, एक गन कैरिज में रख उनके आवास 10 राजाजी मार्ग पर ले जाया गया। यहाँ पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, राहुल गांधी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव सहित अनेक गणमान्य लोगों ने इन्हें श्रद्धांजलि दी। भारत सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति के निधन के मौके पर उनके सम्मान के रूप में सात दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की।

29 जुलाई की सुबह वायुसेना के विमान सी–130जे से भारतीय ध्वज में लिपटे कलाम के शरीर को पालम एयर बेस पर ले जाया गया जहां से इसे मदुरै भेजा गया, विमान दोपहर तक मदुरै हवाई अड्डे पर पहुंचा। उनके शरीर को तीनों सेनाओं के प्रमुखों और राष्ट्रीय व राज्य के गणमान्य व्यक्तियों, कैबिनेट मंत्री मनोहर पर्रीकर, वेंकैया नायडू, पॉन राधाकृष्णन और तमिलनाडु और मेघालय के राज्यपाल के० रोसैया और वी० शडमुखनाथन ने हवाई अड्डे पर प्राप्त किया। एक संक्षिप्त समारोह के बाद कलाम के शरीर को एक वायु सेना के हेलिकॉप्टर में मंडपम भेजा गया। मंडपम से कलाम के शरीर को उनके गृह नगर रामेश्वरम एक आर्मी ट्रक में भेजा गया। अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए उनके शरीर को स्थानीय बस स्टेशन के सामने एक खुले क्षेत्र में प्रदर्शित किया गया ताकि जनता उन्हें आखिरी श्रद्धांजलि दे सके।

30 जुलाई 2015 को पूर्व राष्ट्रपति को पूरे सम्मान के साथ रामेश्वरम के पी करूम्बु ग्राउंड में दफना दिया गया। प्रधानमंत्री मोदी, तमिलनाडु के राज्यपाल और कर्नाटक, केरल और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्रियों सहित 3,50,000 से अधिक लोगों ने अंतिम संस्कार में भाग लिया।

कलाम के निधन से देश भर में और सोशल मीडिया में पूर्व राष्ट्रपति को श्रद्धांजलि देने के लिये अनेक कार्य किये गए। भारत सरकार ने कलाम को सम्मान देने के लिए सात दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी, गृह मंत्री राजनाथ सिंह और अन्य नेताओं ने पूर्व राष्ट्रपति के निधन पर शोक व्यक्त किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, उनका (कलाम का) निधन वैज्ञानिक समुदाय के लिए एक बड़ी क्षति है। वह भारत को महान ऊंचाइयों पर ले गए। 15 अक्तूबर को उनकी जयन्ती पड़ने पर ऐसी महान शयशियत को हम सब की तरफ से कोटी–कोटी नमनः।

शिकवे तो सभी को है जिंदगी से साहब, पर जो जीना जानते हैं वह शिकायत नहीं करते।

सरदार प्रताप सिंह कैरो की स्मृति में

– सूरजभान दहिया (मो० 9818120950)

मैं दादा कुशाल सिंह को उनके 350वें बलिदान पर अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करने हेतु वीर–प्रसूता वसुंधरा बड़खालसा (सोनीपत) गया था। गुरुग्राम से आ रही हमारी कार ने जी.टी. रोड पर बड़खालसा जाने हेतु टर्न लिया। वहाँ पर हमें गंतव्य की ओर जाने के लिए पूछना पड़ा। विदित हुआ कि हम रसोई गाँव में नहीं, बल्कि उस स्थान पर खड़े हैं जहाँ 1965 में सरदार प्रताप सिंह कैरो की हत्या हुई थी।

उस समय मैं 6 फरवरी को छोटूराम कॉलेज, सोनीपत का छात्र था। यह सुनकर मुझे मानसिक पीड़ा हुई एवं दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा की अनुभूति हुई। गुरुग्राम लौटने के पश्चात भी मैं व्याकुल रहा तथा कैरो साहिब को याद करता रहा।

सरदार प्रताप सिंह कैरो एक विवादित व्यक्तित्व थे। वे लगातार 27 वर्ष एम.एल.ए. रहे एवं संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री भी रहे। उन्होंने 50 दिन पूर्व महान राजनेता जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के पश्चात्, 13 जून 1964 को मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया था।

निहाल सिंह कैरो जिले के कैरो गाँव में जन्म हुआ था। उनके पिता सरदार निहाल सिंह कैरो भी एक समाज–सुधारक व्यक्ति थे। कैरो साहिब ने अमृतसर के खालसा कॉलेज से दसवीं कक्षा पास की और 1919 में उनका विवाह रामकौर से हुआ। आगे की पढ़ाई के लिए 1920 में वे अमेरिका चले गए। उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले से एम. ए. (राजनीति) की डिग्री प्राप्त की और मिशिगन के एन आर्बर विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया।

एन आर्बर विश्वविद्यालय की डिबेटिंग टीम के कैरो साहिब कैप्टन थे। वे एक अच्छे वक्ता थे। वे लेनिन तथा लिंकन से बड़े प्रभावित थे और इन पर उन्होंने लेख भी लिखे। वे अमेरिका में लगभग 9 वर्ष रहे तथा उन्होंने वहाँ की उन्नत कृषि–पद्धति एवं राजनीतिक व्यवस्था का गहन अध्ययन किया। 1929 में वे भारत लौट आए। कैरो साहिब में युवा प्रतिभा तथा प्रगतिवादी विचारधारा थी। भारत लौटते ही उन्होंने कलकत्ता में एक समाचार–पत्र निकाला, जिसके वे संपादक थे। उस समय भारत में स्वतंत्रता की ज्वाला धधक रही थी। कुछ समय के लिए उन्होंने दिल्ली में एक रेस्तराँ भी चलाया, जो स्वतंत्रता आंदोलन के कार्यकर्ताओं का मुख्य केंद्र था।

उन्हें सिविल डिसओबीडिएंस (सविनय अवज्ञा) आंदोलन में भाग लेने के लिए पाँच वर्ष की सजा हुई। 1937 के पंजाब प्रांतीय विधानसभा चुनावों में वे अकाली दल के एम.एल.ए. चुने गए। उन्होंने गुरदित सिंह कामागाटा मारू को हराया था, बाद में वे किसान आंदोलनों से भी जुड़े रहे।

पंजाब में उस समय यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार थी। कैरो साहिब ने विधान सभा में सक्रिय रूप से भाग लिया। चौधरी छोटूराम से भी उनका संपर्क हुआ। एक बिल पर उनका सामना चौधरी छोटूराम से हुआ। चौधरी साहिब ने कैरो साहिब की दलीलों का तर्कसंगत जवाब दिया और उन्हें नसीहत दी कि धर्मांध अकाली दल जैसी पार्टी में अपनी प्रतिभा को जाया न करें। तत्पश्चात् कैरो साहिब ने अकाली दल से त्यागपत्र दे दिया और 1942 में कांग्रेस पार्टी के एम.एल.ए. निर्वाचित हुए।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् वे 1948 में भारत के पंजाब प्रदेश कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष बने। इसके साथ–साथ पंजाब मंत्रिमंडल में मंत्री भी बने। क्योंकि पाकिस्तान से आए शरणार्थियों की पुनर्वास संबंधी समस्याओं का समाधान करना बड़ी चुनौती थी, उन्होंने शरणार्थी पुनर्वास के लिए प्रशंसनीय कार्य किए। परंतु उनका ज्यादातर ध्यान इस बात पर था कि किस प्रकार कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाया जाए तथा ग्रामीण क्षेत्रों में खुशहाली आए। अतः ऊर्जा मंत्री रहते हुए उन्होंने कृषि तथा ग्रामीण रोजगार के विकास के लिए पंजाब में नई परियोजनाओं के निर्माण को प्राथमिकता दी। 1955 में भाखड़ा बाँध के निर्माण की दिशा में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे 1952 से 1955 तक पंजाब के एक लोकप्रिय मंत्री बन गए।

संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री के रूप में

कैरो साहिब ने संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री रहते हुए पंजाब को अग्रणी विकसित राज्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने ग्रामीण विकास की वह विचारधारा अपनाई, जिसे चौधरी छोटूराम ने परिभाषित किया था तथा पंजाब की बुजुर्ग किसान–शक्ति उन्हें छोटूराम की विचारधारा का वारिस मानती थी।

उन्होंने कृषि एवं ग्रामीण युवाओं के विकास के लिए आई.टी.आई. खोलकर प्रशिक्षित युवा शक्ति तैयार की। इससे पंजाब के अनेक युवक विदेशों में जाकर रोजगार एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफल हुए। पंजाब की अद्भुत कृषि–समृद्धि और सुव्यवस्थित विकास ने उसे विश्व में एक गतिशील क्षेत्र के रूप में पहचान दिलाई।

1956 में भारत के पुनर्गठन राज्य आयोग ने हरियाणा गठन की मांग को अस्वीकार कर दिया था। इससे पंजाब के हरियाणा क्षेत्र के राजनेताओं में बड़ी नाराजगी थी। इसके साथ तत्कालीन पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार प्रताप सिंह कैरो पर हरियाणा क्षेत्र के विकास की उपेक्षा के गंभीर आरोप लग रहे थे तथा इस क्षेत्र में काफी आक्रोश था।

हरियाणा क्षेत्र में 1958 में हिंदी आंदोलन शुरू हो गया तथा इस क्षेत्र की राजनीतिक गतिविधियों ने भी जोर पकड़ लिया। चौधरी देवीलाल, चौधरी शेर सिंह तथा अन्य अग्रणी राजनेताओं ने पुनः अलग हरियाणा राज्य बनाने की मांग बुलंद की। इससे मुख्यमंत्री कैरो तथा हरियाणवी राजनेताओं में मतभेद काफी बढ़ गए।

1962 के भारत–चीन युद्ध के पश्चात् हरियाणा राज्य बनाने की मांग ने काफी जोर पकड़ लिया। इस मांग पर असहमति के कारण पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण उत्पन्न हो गया था, जिसके कारण कैरो साहिब को पंजाब का मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ा।

एक रोचक विवरण का उल्लेख करना यहाँ नितांत आवश्यक है। हरियाणा राज्य गठन की माँग के पुरोधा चौधरी देवीलाल, कैरो साहिब के मुख्यमंत्री पद से हटने के बाद उनसे मिलने गए। चौधरी देवीलाल कैरो साहिब के निवास पर जाकर दरवाजे की कुंडी बजाने लगे। कैरो साहिब ने दरवाजा खोला। चौधरी देवीलाल को देखकर कैरो साहिब ने अपनी धर्मपत्नी को आवाज लगाई, "रामकौर! किल्ली ठोक कर हुण चौधरी मिलन वास्ते आए है।"

उनकी धर्मपत्नी सामने आईं और चौधरी देवीलाल से कहा, "कि जाट नू जाट ही कटदा है, पर मैं आत्मा की गल कर रही, चौधरी। पर जाटों को तेरे प्रधानमंत्री बनने की आस जरूर होगी। एक दिन चौधरी, तू मुख्यमंत्री जरूर बनेगा। चौधरी छोटूराम अब आने वाले रहे।"

श्रीमती कैरो जाटों की दूरदर्शिता पर प्रश्न कर रही थीं। उन्होंने आगे कहा, "देश के बँटवारे ने छोटूराम की शक्ति को कमजोर किया है और पंजाब से अलग होने का मतलब हरियाणा का अलग होना होगा। इससे सिख और हरियाणवी जाटों के बीच दूरी बढ़ेगी और हमारी जनशक्ति कमजोर होगी। अंग्रेजों ने 1857 में विशाल हरियाणा को तोड़कर उत्तर प्रदेश के जाटों को हमसे अलग किया था। चौधरी, मैं कह रही हूँ, मेरी बात याद रखना, तेरा हरियाणा भी वह नहीं रहेगा, जिसका तू सपना पाले बैठा है।"

जब मैं चंडीगढ़ में सेवारत था, तो मैं वहाँ Jat Intellectuals Foundation का सदस्य था। सरदार प्रताप सिंह कैरो की 25वीं पुण्यतिथि पर पंजाब विश्वविद्यालय में फाउंडेशन की ओर से कैरो साहिब को श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए डॉ. घुमन सिंह मान ने उपरोक्त विवरण का उल्लेख किया था।

मौखिक इतिहास, इतिहास–पठन एवं शोध का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत है। विदेशों में तो इसकी महत्ता बढ़ती जा रही है, परंतु हमारे देश में इस पर उतना ध्यान नहीं दिया जा रहा है, जिससे हम कई प्रमुख विषयों की जानकारी से वंचित हो रहे हैं।

किसान समुदाय के इतिहास के बारे में भी काफी जानकारी मौखिक रूप में उपलब्ध है, जिसका संकलन होना चाहिए। इसके साथ–साथ जाट बुद्धिजीवियों की भी कोई सक्रिय संस्था नहीं है। इसके कारण जाट समुदाय का इतिहास जिस तरह लिखा और संरक्षित होना चाहिए, वह नहीं हो पा रहा है।

श्रीमती कैरो की उपरोक्त टिप्पणी पर मनन जरूर करना चाहिए।

क्रांतिकारी

– रामचन्द्र पन्नू, साईकल वाला थानेदार
(मो० 89014 32832)

म्हारे क्रांतिकारियाँ नै भय बिठा दिया अंग्रेजों के,
गुपचुप कट्ठे होया करदे भय बडग्या अंग्रेजों के,
कदे सांडर्स मारा बदला लिया लाजपतराय की मोत का,
लाला जी के नेतृत्व में विरोध किया था साइमन का,
लन्दन जा के उधमसिंह नै बदला लिया 1919 कांड का,
जनरल डायर को मारा गोली से बीच संसद हाल के,
म्हारे क्रांतिकारीयाँ नै .....

काकोरी में रेल का खजाना लूट्या,
अंग्रेज को मार–मार हथोडे तजूरी तोड़ा था,
अंग्रेज का उधर अलफ्रेड पार्क में "शेखर" ने खून किया,
अंग्रेजों से बचाव में आखरी गोली अपने सिर में मारी,
वादा याद आया बचपन का,
म्हारे क्रांतिकारियां नै .....

उदमीराम की टोली नै अंग्रेजों के 2–3 सिपाही मार दिए,
उदमीराम "जाट" सोनीपत में पेड़ के उपर टांग दिए,
छाती और शरीर में बडी–बड़ी, 15–20 कील ठोक दिए,
अफसोस ! है कि उनका बदला ना ले सके अंग्रेजों तैं,
म्हारे क्रांतिकारीयाँ नै .....

लेकिन क्रांति केवल उपरोक्त ही नहीं होती,
क्रांति से शान्ति भी कई वार है आती,
रूस की क्रांति के बाद शायद शान्ति आई थी,
उधर "अफीम युद्ध" के बाद चीन में शान्ति छाई थी,
शान्ति के प्रयास करना सबसे बड़ी क्रांति है।

जय हिन्द, जय भारत

आप खुद को जैसा मानते हैं धीरे–धीरे वैसे ही बन जाते हैं.. इसलिए खुद को भाग्यशाली, शक्तिशाली और सफल मानिए।

वीरांगना शिवदेवी तोमर तथा जयदेवी तोमर

– तेजयात सिंह 'देव', (मो० 9968309443)

10 मई, 1857 मेरठ में सेना ने स्वतंत्रता का उद्धघोष कर दिया। सेना के बहादुर सिपाहियों ने अंग्रेज अधिकारियों का कत्ले आम कर दिया। फिर सेना ने दिल्ली की ओर कूच कर दिया, मेरठ से सेना गांवों से होकर आगे बढ़ रही थी। गांवों में भी उत्तेजना उत्पन्न हो गई और क्रान्ति की आग धधकने लगी। गांवों से बहुत से लोग अपने बर्छ, बल्लभ तथा भाले लेकर उस सेना के संग चल पड़े, सेना का स्वरूप भारी भरकम हो गया, ऐसा प्रतीत होने लगा मानों अब देश आजादी की दहलीज पर खड़ा है। बिजरौल के शाहमल सिंह ने 8000 नवयुवकों की सेना को प्रशिक्षित कर आजादी का बिगुल बजा दिया। वह बागपत, बड़ौत तथा बुढ़ाना का क्षत्रप बन बैठा। अंग्रेज शासक असहनीय स्थिति में आ गये और उनकी सेना ने बड़ौत पर भयंकर हमला किया। 32 लोगों को पत्थर के कोल्हू में पिसवाकर चूर–चूर कर दिया तथा उन्होंने बड़ौत के क्रांतिकारियों व उनके परिवार वालों तथा उनके सम्बन्धियों पर भयंकर जुल्म ढाये। बिजरौल, बिजवाड़ा, सिरसली, अंगदपुर जौहड़ी, खड़खड़ी के हजारों क्रान्तिकारियों पर अमानुषिक अत्याचार किये और उन्हें मौत के घाट उतार दिया। अन्न, पानी तथा खाद्य सामग्री भी रोक दी जिससे स्त्रियाँ अबोध बालक तथ बुर्जुगों को तड़प–तड़प कर मरने के लिए विवश होना पड़ा। अंत में इन गांवों को बागी करार दे दिया। इनके मकान, जमीन तथा चल–अचल सम्पत्ति नीलाम कर दी गई। चारों तरफ त्राहिमाम मच गया, अबलाओं के चित्कार, खून से लथपथ लाशें, रोते चिल्लाते लोग, यह एक विध्वंशक मंजर था अंग्रेजों के गुर्गो ने सम्पत्ति की नीलामी छुड़ा ली और उन्होंने तो ब्रिटिशर्स से अधिक जुल्म तथा लूट की जो बिल्कुल अमानवीय थी। वे क्षेत्र के बड़े घराने बन गये। सन् 1947 तक अंग्रेजों के तलवे चाटने तथा अपने आकाओं को खुश करने के लिए गांव की जनता को घोर यातनाएं दी। यहां की जनता को अन्न, वस्त्र भी केवल जीने के लिए ही मिल पाता था। उनका जीवन एक कैदी जैसा था। यह लोग बंधुआ मजदूरों की भांति खेतों पर कार्य करते परन्तु फसल आने पर उन्हें फसल का एक दाना भी मयस्सर नहीं होता था तथा पशुओं के लिये भूसा तक नहीं छोड़ते थे। इन सताए हुये क्रान्तिकारियों की देवियां घास खोद कर पशुओं को पालती थी। बालक सारे दिन जानवरों को चराते थे, वे इसे ही अपना जीवन का उद्देश्य मानते। इन पशुओं का घी दूध बेचकर परिवार का जीवन यापन होता था। अगर कोई चोरी–छिपे इनकी सहायता करता, सरकार का डंडा उस पर भी बरसता, बड़ा कष्टमय जीवन था। इस दुर्दनीय मंजर को शिवदेवी (16 वर्ष) ने अपनी आंखों से देखा था। उसके मन में प्रतिशोध की ज्वाला धधकती थी। भारतवर्ष के गांव तथा शहरों के चित्कार, पेड़ पर लटके स्त्री तथा पुरुष, विलाप करती विधवाएं, सब देखकर शिवदेवी ने अंग्रेजों को सबक सिखाने की ठान ली तथा अपनी मित्र किशन देवी से विमर्श किया तथा साथ लिया। बड़ौत के नौजवानों की गैरत ने उन्हें ललकारा, शिवदेवी ने उन्हें संगठित किया तथा आक्रमणों का बिगुल बजा दिया। तलवार के प्रहार से 17 अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया तथा 25 सिपाही, इधर–उधर छिप गये। शिवदेवी भी इस संघर्ष में घायल हो गई वह मरहम पट्टी कर ही रही थी, तभी एक फौजी दस्ता वहां पहुंच गया, शिवदेवी के घर तथा गली को चारों ओर से घेर लिया। आवाज को सुनकर वीरांगना उन पर शेरनी की भांति टूट पड़ी। अंग्रेज अधिकारी ने सिपाहियों को गोली चलाने का आदेश जारी कर दिया। उनकी गोलियों की बौछारों से क्रान्तिकारी 30 जवानों ने शहादत दी और उस वीरांगना का जिस्म भी छलनी छलनी हो गया। अंग्रेज अधिकारियों को इनकी शहादत से शान्ति नहीं मिली, उस देवी और जवान शहीदों के परिवार के सभी बूढ़ों, बच्चों, जवानों तथा स्त्रियों की भी अपने क्रूर हाथों से नृशंस हत्या कर दी। भारतवर्ष के इतिहास में इतनी कम आयु में शहीद होने के उदाहरण कम ही मिलते है। सारा राष्ट्र इस महान देवी को नमन करता है।

जाट किशोरी जय देवी आयु 14 वर्ष की वीरांगना ने सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में एक मिसाल कायम की ऐसा भारतवर्ष के इतिहास में देखने को कम ही मिलता है। वह स्वयं ही अपना उदाहरण थी। जय देवी ने राष्ट्र और कौम का नाम महान बलिदान देकर रोशन कर दिया। जय देवी ने अपनी बहन शिवदेवी को आजादी के लिए मरते हुए देखा, उसका मन कराह उठा। बहन के अद्भुत साहस से इसकी हिम्मत बंधी और उसने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि जिस पापी अंग्रेज ने अपने सिपाहियों को आदेश देकर मेरी बहन के शरीर को गोलियों से छलनी–छलनी करा दिया था, इस नृशंस हत्या को वह बड़ौत के एक तिमंजिले मकान के खम्बे की ओट से देख रही थी। उसने यहनिश्चय किया कि इस अंग्रेज को मैं अवश्य मौत के मुँह में धकेलकर अपनी बहन और बलिदानी 30 वीर भाईयों का बदला लूंगी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने अंग्रेजों के रिसाले का अनुगमन करना प्रारंभ कर दिया। इस युवा जाटनी ने मेरठ, बुलंदशहर, अलीगढ, एटा, इटावा,

मैनपुरी, मुजफरनगर तथा बिजनौर आदि क्षेत्रों में घूम–घूमकर अंग्रेजों के विरूद्ध 200 लोगों का शहीदी जत्था तैयार किया। जहाँ–जहाँ वह अन्यायकारी, अत्याचारी अंग्रेज अपने रिसाले के साथ जाता था, जयदेवी उसके पीछे–पीछे चलती थी। जहाँ सिपाहियों के रिसाले के तम्बू विश्राम के लिए बने होते थे, यह वीर बाला उसके समीप के गाँव में इन घटनाओं की दुःख भरी कहानी जनता को सुनाकर कुछ भी कर गुजरने के लिए प्रोत्साहित करती थी। अंग्रेज अधिकारी को लखनऊ तक इस किशोरी ने अपने पीछे चलने की तथा 200 क्रान्तिकारियों के भी साथ अनुगमन की जरा सी भी झलक गोरों को नहीं होने दी। वह गोरों का पीछा करती हुई किसी तरह से लखनऊ पहुँच गई। लखनऊ पहुँचने पर उस घातक अंग्रेज का पता लगाने के लिए वह अपने साथियों के साथ जुट हो गई। बड़ी मेहनत के बाद सबने मिलकर उस हजारों के हत्यारे अंग्रेज के बंगले का पता लगा लिया। बंगले में प्रवेश करने के लिए उसे दरवाजों को और ऊपर चढ़ने के लिए खिड़कियों के छज्जों को देखकर उन्हें अपने कार्य की सफलता के लिए विश्वास हो गया, वहां खाने–पीने की आवश्यकता तथा अपनी सुरक्षा की समस्या के साथ–साथ अपने संकल्प की पूर्ति के अदम्य उत्साह और धैर्य से कार्य करती रही। कई बार इस दिशा में में प्रयत्न भी किए परन्तु कभी पहरेदारों को दिन में सतर्क और रात्रि को जागते हुए ही पाया। परन्तु शत्रुओं से बदले की भावना जयदेवी को प्रोत्साहित करती रही। वह अपने साथियों को भी आश्वस्त करती रही। एक दिन आततायी को मारने का अवसर मिल ही गया, लंच के पश्चात् अंग्रेज अधिकारी बंगले के मैदान में घूम रहा था। कभी इधर कभी उधर टहल रहा था। इस कुमारी को मौका मिल गया। ज्यों ही उस अंग्रेज ने अपने पहरा देने वाले सिपाही को कुछ लाने के लिए बंगले में भेजा। उस समय जयदेवी ने उसको अकेला देखकर उस पर अपनी तलवार से प्रहार कर दिया। उसका सिर धड़ से अलग हो गया, आततायी, मारा गया। दूसरी बंगले के चारों सन्नद क्रान्तिकारियों ने, जिन्होंने बंगले के चारों ओर से घेरा हुआ था, उनमें से कुछेक ने एक दम बंगले में घुसकर पहरेदारों को और उसके नौकरों को मार दिया। बंगले में मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा दी और अपने आप वहाँ से जाने को तैयार हो गए। वे इधर–उधर दौड़ ही रहे थे कि बंगले के धुएं ने आस–पास के लोगों को चेता दिया कि बड़ी भारी दुर्घटना हुई है। लखनऊ के नागरिक अपने आप अपने मकानों में घुस गए, दरवाजे बंद कर दिए, परन्तु गोरों की पलटन के सिपाहियों ने सर्वप्रथम बंगले की आग बुझाकर बंगले को बचा लिया और फिर अपनी सगीनों को लिए हुए कुछ फायर करके आतंक फैलाने लगे। उनकी निगाह भागते हुए अपने आप को बचाते हुए क्रान्तिकारियों की ओर गई।

गोरों ने गोलियों से उनके शरीरों को छलनी छलनी बना दिया। घातक अंग्रेज के लहू से लथपथ वस्त्रों वाली जयदेवी को पकड़कर एक पेड़ पर लटका दिया। कई दिनों तक उन्हीं कपड़ों में लखनऊ के लोगों ने उस वीरांगना को देखा परन्तु कोई भी उसे पहचान न पाया क्योंकि वह लखनऊ तथा उसके आस–पास की तो थी नहीं, उसके नाम का भी किसी को पता न था। कुमारी जयदेवी कई दिन तक जब पेड़ पर लटकी रही, उधर कुछ शांत वातावरण हुआ और लोगों ने सड़कों पर आना–जाना शुरू कर दिया तो एक दिन रात्रि के समय कुछ देशभक्तों ने साहस जुटाकर लटके हुए वीरांगना के शरीर को पेड़ पर से उतारकर इस तरीके से पेड़ के नीचे उसकी जड़ों में से सुरंग सी बनाकर उसमें वीरांगना के शरीर को समाधिस्थ कर दिया। सुरंग के ऊपर कुछ पत्थरों को और सूखे पत्तों को तथा घास–फूस को इस प्रकार रख दिया कि किसी को यह अहसास न हो कि यहाँ किसी को छिपाया हुआ है। देवी के शरीर को समाधि देने वाले वीर छुप–छुप करके उस स्थान की निगरानी करते रहे और एक दिन रात्रि को पुरानी इधर–उधर की ईटों को जोड़कर एक छोटा सा चबूतरा बना दिया। कुछ दिनों के बाद उस धूपबत्ती का धुंआ भी उस स्थान को सुगंधित करने लगा। दिनों के बीतने पर घटनाओं की भूल–भूलैया होने पर किसी सजग देशभक्त ने एक पत्थर पर यह लिखकर अज्ञात वीरांगना की समाधि उस पत्थर को दबा सा दिया। सन् 1947 के बाद देश को स्वतंत्र होने पर देशभक्तों के मुख से परम्परागत सुनी हुई बातों के आधार पर उस स्थान को साफ–सुथरा बनाकर उस पत्थर को ऊपर लगा दिया, जो समाधि का पवित्र स्थान आधुनिक विधानसभा की दूरदर्शनों वाली सड़क पर अभी बना हुआ है, जिस पर देशभक्त लोग अपना सिर झुकाकर श्रद्धा–सुमन प्रस्तुत करके कुमारी जयदेवी वीरांगना की आराधना करते हैं। इस छोटी सी नन्ही गुड़िया का कितना बड़ा बलिदान, भारत राष्ट्र उसको नमन करता है।

पूर्व उपराष्ट्रपति श्री वैकेया नायडू ने भी उनके बलिदान को नमन करते हुए पोस्ट की थी। पोस्ट में लिखा था कि जब ये वीरांगनाएं शत्रुओं का मुकाबला कर सकतीं है तो देशवासी क्यों नहीं कर सकते। वीरांगनाओं को सबसे अच्छी श्रद्धांजलि यही होगी कि देशवासी उनकी कुर्बानियों को कभी न भूलें। ऐसे ही क्रान्तिकारियों की बदौलत आज देश खुली हवा में सांस ले रहा है।

Unsung Associates of Mahatma Gandhi Sh. Amritlal Thakkar The first Hindu who fought against untouchability

- R.N.Malik, (Mob. 9911078502)

Sh.Amritlal Vithaldas Thakkar (1869-1951) was the first Hindu social worker who dedicated his entire life for the welfare of Harijans, Adivasi and other destitute castes and classes in India. He belonged to a middle class family in Bhavnagar in Gujrat. He travelled Assam Hills, hills of Chhota Nagpur, coastal areas of Saurastra and Travancore and draught stricken areas of Orrisa in order to study the plight of people living there (forest areas). He was the man to give them the name of Adivasi at the end of his journey.

Thakkar did his diploma or Licentiate in Civil Engineering from Poona Engineering college in 1890. He got the appointment of Civil Engineer in Porbander, Sangli and finally in Bombay Corporation. He also went on deputation to East Africa to lay the first Railway line there and returned to Bombay after two years.

His conscience got a severe jolt when he saw sweepers carrying human excreta as head load. Consequently, he resigned from his post and decided to dedicate the rest of his life to improve the lot of Harijans of India. Firstly, he became the member of the Servants of Society set up by Gopal Krishan Gokhale in 1914. This society was a replica of Quakers in England. Thakkar came in contact with Mahatma Gandhi when the later came back to India from South Africa in January 1915 and reached Ahmedabad and set up the Sabarmati Ashram. Initially, the Ashram had 30 members. Soon, Thakkar came to the Ashram and put Gandhi Ji in a quandary by telling him that the family of Dudhabhai, a Dalit, is very keen to join his Ashram. Gandhi Ji, in turn, put up the proposal before his team of Ashramites. They showed reluctance in the admission of a Dalit in the Ashram fearing severe fall in donations. But Gandhi Ji put his foot down and admitted Dudhabhai, his wife Laxmi and their small daughter. Kasturba Ji also showed her annoyance but Gandhi Ji told her sternly that she could leave the Ashram if she could not tolerate a Dalit Ashramite. Kasturba Ji yielded and brought up the daughter of Dudhabhai as her own grand daughter.

The first project initiated by Amritlal was to set up a school for the children of sweepers near Bhangi colony in Bombay and also collected funds for their higher education. In 1923, he set up the Bheel Seva Mandal in Madhya Pradesh. Next year, he goaded the Bombay Corporation government to pass a Bill for compulsory primary education for all the children and also set up a Committee to prepare a report on the plight of Harijans and other destitute castes and suggest a welfare program for their amelioration. Seeing his untiring effort, Gandhi Ji asked him to chair the Kathiawar conference at Porbander held in 1928. The same year, the Orrisa government made Amritlal an important Member of a Committee to suggest welfare measures for the tribal people.

In 1932, Amritlal did the ground work to arrive at the Poonam Pact between Gandhi and Dr.Ambedksr in Poona jail to roll back the Communal Award granted by the British Government soon after the 2nd Round Table Conference in London in 1931. Thereafter, Gandhi Ji set up the Harijan Sewa Sangh under G.D.Birla as the President and Amritlal as the Secretary. Both of them collected lot of donations and contributions for the welfare works for Harijans.Soon, Thakkar played a crucial role in moving the Bill for entry of Harijans in Hindu temples by Congress leaders in the Central Assembly. Earlier, he also took part in the Salt Satyagraha or Dandi March in March 1930 and was arrested and kept in the Yaravada jail in Poona alongwith Gandhi Ji and Mahadev. Thereafter, he travelled in tribal areas of forests in whole of India to prepare a comprehensive report on their sad plight and highlighted the need for initiating welfare projects for ameliorating their lot by granting forest rights. He also travelled with Gandhi Ji during his peace March in Noakhali in 1946.

After independence, he was taken up as a member of the prestigious Constituent Assembly where he played a key role in incorporating

constitutional safeguards for Harijans, Adivasi and the people of primitive castes and clans. Government of India issued a postal stamp in his memory after his death in 1951. Maharashtra government named a residential colony in Bombay as Thakkar Bappa Basti. Madhya Pradesh government instituted an annual award in his memory for those who did exemplary work for tribal people. Gandhi Ji had called him as Father of Harijans. But the marginalised poor called him Thakkar Bappa and Dalits of Madras called him Appa Thakkar.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 07.02. 98) 28/5'5" B. Tech. Computer Science. Working in Infosys Company as Senior Associate Consultant as Business Analyst at Chandigarh. Father's own business of Computer & laptop hardware and service shop. Younger brother Mechanical Engineer, working in MNC in Chicago USA (U.S. Citizen.) Mother housewife. Family settled at Hisar. Avoid Gotras: Jakhar, Sheoran, Beniwal. Cont.: 7015791824
- SM4 Jat Girl (DOB March, 2001) 26/5'4" M.A. Political Science from P. U. Chandigarh. Preparing for Government job. Father in Chandigarh Administration. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Dahiya, Malik, Hooda. Cont.: 8544908698
- SM4 Jat Girl 33/5'6" B.Com. Chartered Accountant. Father Inspector in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Chahal, Dahiya, Dhanakhar. Cont.: 9417301464
- SM4 Jat Girl (DOB 1990) 36/5'8" Convent educated. Employed in Chandigarh International School. Highly educated family in urban setting. Avoid Gotras: Malik, Sura. Cont.: 9888626559
- SM4 Jat Girl (DOB 29.10.94) 31 BAMS, M.D. (Ary). Kayachikitsa from GGSIPU New Delhi. Working as Medical Officer (Group A) on regular basis in Ayurvedic Medical College National Institute of Ayurveda, Ministry of AYUSH, Sector 4, MDC Panchkula. Income Rs. 16-20 LPA. Father Inspector in Delhi Police. Mother housewife. Own residence in Delhi. Avoid Gotras: Grewal, Malik, Jakhar. Cont.: 8383850692
- SM4 Jat Girl (DOB 09.12.98) 27/5'6" B.Com. from GGDSD College, Chandigarh. Working as UDC in ESIC Haryana since 2023, posted at Faridabad. Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Mann, Deswal, Sihag, Dalal, Dagar. Cont.: 9464258526, 9417187325
- SM4 Jat Girl (DOB 07.08.93) 33/5'5" C.A. Working as Auditor in a US based Company. Father in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Dahiya, Dhankhar. Cont.: 9855342900
- SM4 Jat Girl (DOB 09.11.99) 26/5'4" B.Sc. Noun Medical, B.Ed, CTET-I and CTET-II cleared, 12th PCM. Working as Teacher in Chandigarh. Father retired from Army. Mother housewife. Avoid Gotras: Teotia, Nadar. Cont.: 9646729365
- SM4 Jat Girl (DOB 28.10.98) 27/5'4" B.A. LLB (O. P. Jindal University). Profession Advocate. Working with International Law Firm. Salary Rs. 3 lac per month (36-40 LPA). Father Advocate in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Mother Senior Officer, General Manager in a Corporation of Haryana. Family settled at Panchkula. Preferred IAS/IPS/Judicial Officer or well established professional/Businessman from reputed family background. Avoid Gotras: Badhran, Goyat, Maan. Cont.: 9417203810
- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 28/5'5" M. A. English from Punjab University, Computer Diploma, B.Ed., CET qualified. Working in Private Company at Mohali. Father retired Superintendent from Haryana Government. Mother House wife. Preferred match Chandigarh/Tricity. Family settled at Zirkpur (Punjab). Avoid Gotras: Dahiya, Balyan. Cont.: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 01.05.94) 31/5'2" M.A. English from Punjab University. JBT. B.Ed. from Punjab University. CTET-tgt. Thrice, HTET-jbt. Four times, HTET-pgt. Twice, TET-jbt. Twice. Working as Government primary teacher in Punjab near Chandigarh. Father Deputy Manager in HMT. Pinjore. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Pilania. Cont.: 9416869289
- SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298
- SM4 Jat Boy (Divorced) 35/5'11" Working as Senior Section Engineer Railways. Father Inspector in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Chahal, Dahiya, Dhanakhar. Cont.: 9417301464
- SM4 Jat Boy (DOB 1994) 32/5'8" Architect by Profession. Well educated family, Urban Living, having rural and urban property. Avoid Gotras: Khatkar, Malik. Cont.:

अहंकार और संस्कार में फर्क है। अहंकार दूसरों को झुका कर खुश होता है और संस्कार स्वयं झुक कर खुश होता है।

9465448508

- SM4 Jat Boy (DOB 25.09.94) 32/5'10" Graduate. Central Government job in Post Office. Salary Rs. 6 lakh per year. Father retired from Government service. Mother housewife. Avoid Gotras: Dhayal, Punia, Phogat. Cont.: 9416270513, 9996611722
- SM4 Jat Boy (DOB 09.03.2001) 25/5'7" M.Sc. Biotechnology DCRUST University. Working as Quantity Control Officer Pharma Industry Poanta Sahib (H.P.) . Income Rs. 3 LPA. Own residence at Ganour (Sonepat). Avoid Gotras: Ghanghas, Rathee, Duhan. Cont.: 8930486482
- SM4 Jat Boy (DOB 1994) 32/ Architect by Profession. Avoid Gotras: Malik, Khatkar. Cont.: 9888626559
- SM4 Jat Boy (DOB 24.11.94) 31/5'11" B. Tech. Mechanical. Data Analysis Courses from Punjab Engineering College Chandigarh. Father S.I. in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Rana, Rathee, Antil. Cont.: 8360603481, 9417374072
- SM4 Jat Boy (DOB 15.11. 95) 30/ 6 feet. B.Tech CSC. Working as Senior Manager at Novartis Hyderabad. Package Rs. 55 LPA with hybrid job. Father retired from Air Force. Mother housewife. Own house at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Lakra, Malik, Mann. Cont.: 7989389447
- SM4 Jat Boy (DOB 02.02.97) 29/ 12th Medical and Non-medical, M.A. (History). Working as Collection Manager in HDFC Bank. Avoid Gotras: Pawar, Siwach, Ahlawat. Cont.: 9317958900
- SM4 Jat Boy (DOB 03.08.99) 27/ B. A. History (Hons.) from GTB Khalsa College, D.U. LLB, LLM from Faculty of Law, DU. Private International Law, International Court of justice, Netherlands. Law & A.I. from Landon School of Economics. Now practicing in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Residence in Chandigarh. 8 acre agriculture land, flat in Delhi, Farm House and Shop (Commercial property) in Samalkha. Avoid Gotras: Phour, Malik, Khatri. Cont.: 9466095995, 9416640442.
- SM4 Jat Boy (DOB 10.05.99) 27/5'10" M. A. from D.U. Diploma Health Inspector. Employed as Constable in Haryana Police. Father in Government service. Mother housewife. Brother in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Sangwan, Ahlawat, Jangu. Cont.: 9718720065
- SM4 Jat Boy (DOB 27.04.93) 33/6'2" B. Tech from Punjab Technical University. Working as Clerk in High Court Chandigarh. Father after retirement working in Air Force and Haryana Education Department. Mother retired teacher. Avoid Gotras: Malik, Kundu, Dalal. Contact:7340867216
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 27/5'9" B. A. M.A. D-Pharmacy. Own Pharmacy shop. Father farmer. Mother housewife. Three acre agriculture land. 150 gaj plot in Rohtak, 200 gaj plot in village. Avoid Gotras: Phaugat, Rana, Tehlan. Cont.: 9306403477
- SM4 Jat Boy (DOB 16.04.98) 28/5'8" Employed in Judicial Department as Clerk at Tarn Taran. Father retired from HSVP. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Mehlawat, Joon. Cont.: 9877797632
- SM4 Jat Boy (DOB 27.07.98) 28/5'4" B. Tech. in Computer Science from Kurukshetra University. Post Graduate Diploma in Cloud Computing from Loyalist College, Canada. Working as Food Supervisor in Toronto (Work Permit). Father Medical Shop in Ambala. Mother in Government job. Elder sister married, settled in Canada. Avoid Gotras: Mor, Panwar. Cont.: 7015484270, 9416002852
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 31/5'9" B. Tech. in Mechanical Engineering. Working as Manager Digital Marketing in a reputed MNC at Pune. Salary Rs. 12 LPA, Freelancing business. Father retired from PGIMER Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 75089229045, 9779132009
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.96) 29/5'9" Graduate & Post graduate from S.D. College Chandigarh. Occupation: Business. Father Businessman. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Panghal, Moond, Sangwan. Cont.: 7986350696
- SM4 Jat Boy (DOB 13.02.96) 30/5'8" B. Tech. from PICT (Pune). P. G. from DAC Pune. Working as Software Engineer in Lowe's Banglore. Package Rs. 22 LPA. Father retired Honorary Flying Officer. Mother housewife. Family settled in Zirakpur. Avoid Gotras: Khatkar, Chahal, Saharan. Cont.: 9101241162
- SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 31/5'11" B. Tech. Software Engineer. Income Rs. 18 LPA. Father Professor retired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 9463742136
- SM4 Jat Boy (DOB 09.01.80) 36/5'7" B.E. in Electrical & Communication. MBA in General Management. Working as Associate Director, Management Consulting Company- Forvis Mazars. Income RS. 35.5 lakh per year. Father retired Doctor. Mother retired Teacher. Own house in Panchkula, Banglore. Avoid Gotras: Phogat, Lamba, Ahlawat. Cont.: 9900107055
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan, Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 09.11.98) 27/ 6 feet. MA, History. Employed as Clerk in Haryana Government on regular

basis. Avoid Gotras: Pattar, Gill, Nehra. Cont.: 8264141578

- SM4 Jat Boy (DOB 18.05.96) 29/5'10" B. Tech. PDM Bahadurgarh. Master (Finance) from Whu Otto Beisheim College Germany. Working as Equality Analyst in Kanou Capital New Delhi MNC, Headquarter in London (U.K.) Package Rs. 18 LPA. Father retired from Army, now Clerk in Oriental Bank of Commerce. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Dahiya. Cont.: 8708370617, 9416823236
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.97) 28/5'8" Bachelor of Commerce. Working as Assistant Manager in IDBI Bank. Avoid Gotras: Sangwan, Kaswa, Jangu. Cont.: 9068574655

POSTER MAKING COMPETITION ON 26.11.2026

FOR SCHOOL GOING STUDENTS.

A Poster Making Competition will be organized by Jat Sabha Chandigarh/Panchkula for school going students on 26th November, 2026 from 10 to 11 AM in the premises of JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh-160019.

The aim of this Competition is to generate creative spirit among the children and polish the existing potential among them. To widen the scope of talent search in this field and to give incentive to the deserving children, it has been decided to classify all the students into three categories as under:-

Category A	**Class III to V**
Category B	**Class VI to VIII**
Category C	**Class IX to XII**

For each category there will be prizes of Rs. 2100/-, Rs. 1500/-, Rs. 1100/- for First, Second and Third position respectively and two consolation prizes of Rs. 500/- will be given to each participating school. The topic of the Poster Competition will be **"Clean Village, Strong Nation"**, Or **"Healthy Body- Healthy Mind"**, or **"Education For Everyone"** Or **"Plant Trees And Save Environment"**. Duration of the Competition will of one hour.

The entries for the Competition may be sent to JAT BHAWAN, 2-B, SECTOR 27-A, CHANDIGARH-160019 by post, on E. mail: jat_sabha@yahoo.com or personally by 20th November, 2026 up to 5 P.M.

Terms & Conditions of the Competition are as under :-

1. The participants must bring their identity cards or the identity slips along with attested photograph issued by the Head of the Institution/School for eligibility in the Contest.
2. The participants should bring their own drawing material and cardboard. Only drawing sheets will be given by the Competition Organizers.
3. The judgment of the Chairman of the Competition Committee will be final and binding on all.
4. The result of the Competition will be announced on the same day and prize winners will be honoured with cash awards and merit certificates on the occasion of Basant Panchmi Function on 11th February, 2027.

Further enquiries may be made on Telephone Nos. 0172-5086180 or personally from the Jat Sabha Office, at JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.- 160019

॥ जय हरियाणा ॥
समृद्ध हरियाणा - विकसित हरियाणा

हरियाणा दिवस

1 नवम्बर

हरियाणा दिवस
के अवसर पर

जाट सभा द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह

दिनांक : 1 नवम्बर 2026 (रविवार)
स्थान : जाट भवन, सेक्टर 27 चंडीगढ़

मुख्यातिथि
श्री मनीष तिवारी जी
सांसद, चंडीगढ़

अध्यक्षता
डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक
पूर्व डीजीपी, हरियाणा
अध्यक्ष, जाट सभा चंडीगढ़, पंचकुला

कार्यक्रम में जाट भवन में लगी लिफ्ट का **उदघाटन** भी मुख्यतिथि द्वारा किया जायेगा।

निवेदक : **जाट सभा चंडीगढ़, पंचकुला**

हरियाणा सचिवालय

हरियाणा सिविल सेवा (HCS)
फाइनल परिणाम
में टॉप 10 रैंकर्स में से
6 उम्मीदवार जाट समुदाय से हैं


रैंक 1
अभिषेक सरोहा


रैंक 2
कुलदीप सिंह श्योराण


रैंक 3
ईशा काला


रैंक 6
रजत फौगाट


रैंक 8
मानवी


रैंक 9
रेनू ग्रेवाल

उपरोक्त सभी की उम्मदा उपलब्धि पर जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त कार्यकारिणी तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और इनके व समस्त परिवारों के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

जाट सभा
चंडीगढ़/पंचकूला

आर्थिक अनुदान की अपील



जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,73,61,634 (दो करोड़ तिहत्तर लाख इकसठ हजार छह सौ चौंतीस) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 76,47,200 (छिहत्तर लाख सैंतालीस हजार दो सौ) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। इसके बावजूद आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री के निर्माण से यात्रियों के ठहरने व विश्राम हेतु अस्थाई तौर पर उचित व्यवस्था कर दी गई। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजैक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोसियाटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।